आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 354 | ARYA SABHA MAURITIUS | *25th Feb. to 3rd Mar. 2017*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ओ३म् ।। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंयोरभि स्त्रवन्तु नः ।। *यजु० ३६/१२*

Om Shanno Devirabhishtaya Āpo Bhavantu Pītaye.
Shanyorabhisravantu Nah. *Yaju 36/12*

Meaning :- **Om** - God as the protector; the highest name for God, **Devi** - The Blissful God who is full of divine qualities, **Āpah** - The Omnipresent God, **Abhistaye** - (for our) desired end, **Pītaye** - for Absolute bliss, **Nah** - to us, **Sham** - peace and grace, **Bhavantu** – be, **Nah** - on us, **Shanyo** - peace and welfare, **Abhishravantu** - (shower) from all sides

Purport :- *O Blissful and Omnipresent Mother ! You are full of divine qualities and the Giver of peace and bliss. Fulfil our desires and shower your blessings from all sides on us.*

Explanation :- In the above Mantra, God is addressed as 'Devi' and 'Āpah'. He is referred to as 'Devi' because He is full of Divine qualities. He is Merciful like a beloved mother, Protective like a good father, Helpful like an affectionate brother and sincere like a dear friend. He is Just and Gracious.

He is 'Āpah' -- Omnipresent. He is as Holy as pure water. It is through His grace that our lives become peaceful. We pray Him to bestow His grace on us and to fulfil all our desires. It is only when we become pure like crystal-clear water that He showers His blessings on us.

Dr O.N. Gangoo

पहचान

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के., आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा

२६ जनवरी २०१७ को भारतीय उच्चायोग ने भारतीय गणतन्त्र दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया। इस गणतन्त्र दिवस के दो ही दिन पश्चात् अर्थात् शनिवार २८ जनवरी को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र में 'पहचान' नामक एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के पूर्व प्रधानमन्त्री माननीय श्री अनिरुद्ध जगनोथ जी थे । उस अवसर पर अनेक माननीय मन्त्रियों के साथ बहुत से भारतीय एवं मॉरीशसीय गण्यमान्य जन भी उपस्थित थे।

'पहचान' कार्यक्रम के आयोजन के लिए भारतीय उच्चायोग के कमेटी-कक्ष में हमारे देश की अनेक धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में कई बैठकें हुईं, जिनकी अध्यक्षता भारतीय उच्चायुक्त, महामहिम श्री अभय ठाकुर जी ने की। कार्यक्रम की तैयारी में भारतीय उच्चायोग के प्रथम सचिव श्री पंकज जिंदल, डॉ० श्रीमती नूतन पांडे, इन्दिरा गांधी सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक, श्री संजय शर्मा जी एवं अन्य जनों का योगदान स्तुत्य था।

भारतीय उच्चायोग के आमन्त्रण पर भारत के प्रसिद्ध संतूरवादक श्री अभयरुस्तम सोपोरी और सूफ़ी गायन में निष्णात सुश्री रागिनी रेनू जी ने मॉरीशस में पदार्पण किया और अपने वादन-गायन के माध्यम से सैकड़ों उपस्थित जनों को आनन्द-विभोर कर दिया। उनके चित्ताकर्षक कार्यक्रम के पश्चात् अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों का प्रतिनिधित्व करते हुए इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के कलाकारों ने अपने शास्त्रीय संगीत-नृत्य और गायन द्वारा सबको मन्त्र-मुग्ध कर दिया ।

कार्यक्रम का शुभारम्भ भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर जी के स्वागत भाषण से हुआ था। उन्होंने हिन्दी-अंग्रेज़ी में सन्देश देते हुए बताया कि भारत और मॉरीशस दोनों ही बहुजातीय, बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक देश है।

उन्होंने रेखांकित किया कि दोनों देशों में इस विविधता में एकता का साम्राज्य दर्शनीय है। महामहिम ने स्मरण दिलाया कि हमारे पूर्वज भारत के विभिन्न प्रान्तों से मॉरीशस आये थे और आज भी मॉरीशस में बसे भारतीय वंशज अपने मूल से जुड़े हुए हैं। अतः इस कार्यक्रम का उद्देश्य यही है कि भारत और मॉरीशस की सांस्कृतिक पहचान को अमिट बनाया जाए।

सदियों पूर्व अपनी मातृ-भूमि भारत को छोड़कर भारतीय मूल के लोग भारी संख्या में विश्व के अनेक देशों में जाकर बस गए हैं । इस सन्दर्भ में भारतीय प्रधान मन्त्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का कथन है कि भारत-मॉरीशस का सम्बन्ध विशेष है। मॉरीशस के विकास–कार्यों में भारत की विशेष दृष्टि और ध्यान है।

अपने सन्देश के निष्कर्ष में महामहिम ने बताया कि उनकी अभिलाषा है कि 'पहचान' एक नियमित वार्षिक कार्यक्रम बन जाए, ताकि सभी भारतीय मूल के लोग एक छत्र के नीचे आकर अपने सम्बन्ध को सुदृढ़ बनाए रख सकें।

डॉ० नूतन पाण्डे और कला एवं संस्कृति मंत्रालय की प्रतिनिधि श्रीमती सन्ध्या जगरनाथ जी ने कार्य का सुन्दर संचालन किया। धन्यवाद समर्पण के उपरान्त एक ग्रुप फ़ोटो लिया गया, जिसमें गण्यमान्य जनों के साथ अनेक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अन्त में सभी का भोजन द्वारा सत्कार किया गया।

सम्पादकीय

देश-भक्ति की भावना

मॉरीशस हमारी जन्मभूमि है। इसी धरती के खाद्य-पदार्थ ग्रहण करके हम सभी देशवासी जीते हैं। इसी ज़मीन पर हमारा पालन-पोषण होता है और इसके मनभावन जलवायु से हमारा स्वास्थ्य ठीक रहता है। हमारे देश की सुन्दरता और प्राकृतिक छवि सभी विदेशियों को मोह लेती है। इस आकर्षक द्वीप से प्रभावित होकर विदेशी पर्यटक यहाँ छुट्टियाँ मनाना पसंद करते हैं और सुख, शान्ति तथा आनंद अनुभव करके हमारे इस रमणीक टापू को स्वर्ग सदृश मानते हैं। हम सभी नागरिकों को अपनी जन्म-भूमि के प्रति अगाध प्रेम बढ़ाना चाहिए।

हमारा देश छोटा है पर अपने प्राकृतिक सौंदर्य से अपना नाम रोशन कर रहा है। हमारी मातृ-भूमि के भूतल में सोना, चांदी, हीरे, मोती, पीतल जैसी बहुमूल्य धातुओं की खानें तो नहीं हैं, परन्तु हम अपने ज्ञान, अनुभव तथा तपोबल से अपने प्यारे देश को चमका रहे हैं। हमारी कड़ी मेहनत से हमारी ज़मीन, सोना उगल रही है। ज्ञान-विज्ञान तथा नवीन तकनीकी साधनों से नये-नये उद्योग-धंधे ज़ोरों से चल रहे हैं, जिनके द्वारा राष्ट्र का आर्थिक विकास हो रहा है।

मॉरीशस एक बहुसाम्प्रदायिक देश है, लेकिन हम सभी बिना मतभेद की भावना से आपसी प्रेम, सहयोग तथा एकता के सूत्र में बंधकर बड़े आनंद पूर्वक यहाँ जीवन व्यतीत करते हैं। हमारे आपसी प्रेम देखकर विदेशी लोग चकित हो जाते हैं और देशवासियों की प्रशंसा करते हैं। हमारी मेहनत और स्वदेश-भक्ति के कारण मॉरीशस की प्रसिद्धि दुनिया में बढ़ती जा रही है।

देश-भक्ति के पाठ पढ़ाने वाले हमारे पूर्वज़ों ने बड़े ही तप, त्याग, पुरुषार्थ तथा साहस से अपने शरीर को कंकाल बनाकर इस बंजर भूमि को उपजाऊ बनाया था। उनके घोर संघर्ष से यहाँ इतने परिवर्तन हो पाए हैं। हमें उनकी देश-भक्ति से प्रेरित होना चाहिए।

देश भक्ति की भावना जागृत होने से हमारे पूर्वजों ने स्वतन्त्रता का आंदोलन शुरू किया था, जिसके प्रभाव से हमारा परतन्त्र देश १२ मार्च १९६८ को स्वतन्त्र हो पाया था, जिस शुभ दिन को हमने बड़े गर्व के साथ अपना राष्ट्रीय ध्वज स्वतन्त्र आसमान में फहराया था। हम उन सभी देश-भक्तों के प्रति नतमस्तक हैं।

स्वतन्त्रता के बाद राष्ट्रपिता सर शिवसागर रामगुलाम जी प्रथम प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए और उनके प्रशासन काल में देश हर क्षेत्र में उन्नति की ओर अग्रसर होने लगा। देश-भक्ति की भावना द्वारा सभी सत्ताधारी, पूँजीपति, कर्मचारी तथा हर एक नागरिक देश के उत्थान में जुट गये और आपसी सहयोग से शीघ्र ही हमारा देश प्रगतिशील होता गया, जो देश-भक्ति का फल है।

हम एक प्रजातन्त्र देश के नागरिक हैं। हम चुनाव में स्वयं अपने सत्ताधारी चुनते हैं। चुनावी अभियान के दौरान में हार-जीत की दौड़ होती रहती है, जिस दौड़ में द्वितीय प्रधान-मन्त्री सर अनिरुद्ध जगनाथ चुने गए, फिर कई वर्षों तक शासन करने के बाद डा० नवीनचन्द रामगुलाम जी प्रधान-मन्त्री बने। तत्पश्चात् मान० पोल रेमों बेरांज़े, फिर पुनः डा० नवीनचंद रामगुलाम प्रधान मन्त्री के पद पर आसीन हुए। २०१४ के आम चुनाव में ले पेप पार्टी की भारी जीत होने के बाद सर अनिरुद्ध जगनाथ जी प्रधान मन्त्री चुने गए और २०१७ में माननीय प्रवीण कुमार जगनाथ जी देश के पाँचवा प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए।

माननीय प्रवीण जगनाथ जी में देश भक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है। उनकी भावी परियोजनाएँ देश वासियों के हित में साकार प्रतीत हो रही हैं। हमें पूरा विश्वास है कि वे अपने पिता सर अनिरुद्ध जगनाथ के पद चिह्नों पर चलकर आधुनिक मॉरीशस का उत्थान करेंगे। मॉरीशस को हिन्द महा सागर का चमकता मोती प्रमाणित करेंगे ।

हम आगामी १२ मार्च २०१७ ई० को अपने देश का २५ वाँ गणतन्त्र एवं ४९ वाँ स्वतन्त्रता दिवस का आयोजन करने जा रहे हैं। हमारी यही आशा है कि हमारा देश उन्नति के शिखर पर अग्रसर होता रहे ।

परमात्मा की कृपा से यहाँ कोई भी देश-द्रोही पैदा न हो। देश की समस्त जनता देश-भक्त की हैसियत से अपनी जन्म जननी की सेवा एवं रक्षा में सदा समर्पित हो। जय मॉरीशस ।

बालचन्द तानाकूर

जनवरी २०१७ की गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न, मंत्री आर्य सभा

यद्यपि जनवरी, २०१७ का पहला मास है जिसमें आर्य सभा से सम्बद्ध शाखा-समाजों ने निम्न गतिविधियाँ सम्पन्न कीं ।

१. दिनांक – गुरुवार १२ जनवरी को दोपहर ४.०० बजे निर्गिन भवन में पहली पूर्णिमा यज्ञ सम्पन्न किया गया ।

२. गुरुवार दि० १२ जनवरी को ही काँतोरेल आर्यसमाज ने आर्य सभा मोरिशस के तत्वावधान में एवं मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग नववर्षारंभ एवं संक्रान्ति का आयोजन किया ।

३. गुरुवार दि० १९ जनवरी, शुक्रवार २० जनवरी और शनिवार २१ जनवरी को दिन के १.३० बजे से ३.३० बजे तक भारत से आये हुए स्व० प्रणवानन्द ने दो आचार्यों, एक शिष्य को लेकर एक कार्यशाला लगायी जिसमें नित्य प्रति अच्छी संख्या में लोगों ने भाग लिया ।

४. रविवार १२ जनवरी २०१७ को प्रातः ८.२० बजे से ९.३० तक स्वर्गीय पण्डित धरमवीर देबी जी की स्मृति में श्रद्धांजलि यज्ञ सम्पन्न किया माहेवर्ग आर्यसमाज ने, देबी परिवार, पुरोहित मण्डल एवं ग्राँ पोर आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से ।

५. शनिवार ता० १४ जनवरी २०१७ को सायं ४.०० बजे लावेनीर आर्य समाज एवं आर्य महिला समाज ने आर्य सभा के तत्वावधान में मोका आर्य ज़िला परिषद् के सहयोग से मकर संक्रान्ति यज्ञ, भजन एवं प्रवचन का आयोजन किया ।

रविवार दि० २९ जनवरी २०१७ के दोपहर २.०० बजे दीक्षांत समारोह (ग्राजूएसन सेरेमोनी) का आयोजन पाई के ऋषि दयानन्द संस्थान में किया गया था। जिसमें मोरिशस गणराज्य के उपराष्ट्रपति परामासिवेन पिल्ले वायापुरी, जी.ओ.एस.के ने उपस्थिति देकर कार्य की शोभा बढ़ायी ।

कार्यक्रम सब दृष्टि से सफल रहा डी०ए०वी० डिग्री कॉलेज के कई बोर्ड मेम्बरों के साथ विद्यार्थियों के माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों ने भी भाग लिया।

स्वामी दयानंद जयन्ती के अवसर पर पाई आर्यसमाज में यज्ञ एवं प्रवचन

रविवार १२ फ़रवरी को आर्यसमाज पाई में साप्ताहिक सत्संग के दौरान स्वामी दयानंद जयन्ती मनाई गयी। १८.३० बजे प्रातःकाल यज्ञ शुरू हुआ । यज्ञ के बाद समाज की मंत्रिणी द्वारा कार्य का संचालन हुआ। स्थानीय समाज के प्रधान श्री ज्ञान धनुकचन्द द्वारा स्वागत् भाषण हुआ। प्रधान जी ने बताया कि इस महीने में दयानंद दशमी और ऋषि बोध पर्व है। हमारे सभी पर्व हमारी संस्कृति से जुड़े हुए हैं। तत्पश्चात् पंडिता चमन जी का संदेश हुआ। पंडिता जी ने सीता अष्टमी और दयानंद दशमी पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने सती सीता के महान् त्याग के बारे में बताया। इस बात पर जोड़ दिया कि सीता आर्य सारी थीं। वे प्रतिदिन संध्या-हवन करती थीं। उनके जीवन से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। सीता पवित्रता की मूर्ति थीं।

इसके बाद पंडिता जी ने बताया कि मूलशंकर का जन्म गुजरात के टंकारा गाँव में हुआ था। पंचांग के अनुसार दशमी तिथि थी। उनका जन्म १२ फ़रवरी सन् १८२४ में हुआ था। इस वर्ष अष्टमी तिथि २१ फ़रवरी को पड़ रही है। स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज का निर्माण वैदिक प्रचार के लिए किया था और आज इस का प्रमाण समाज में वह देखने को मिल रहा है। बहुत से लोग महर्षि के बताये हुए मार्ग पर चल रहे हैं ।

शिक्षा को आगे बढ़ाया जा रहा है। पंडिता जी ने स्वामी दयानंद के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि स्वामी जी के प्रति हम ऋणी हैं ।

पंडिता जी ने – 'ए ऋषि दयानंद तेरी युग-युग तक अमर कहानी हम भूल नहीं सकते हैं कि तूने की जो कुर्बानी .....' भजन गाकर समझाया। वातावरण भक्तिमय था सभी को लाभ हुआ। मंत्रिणी ने ऋषिबोध कार्यक्रम की सूचना दी। १०.०० बजे शांति पाठ के साथ कार्य का विसर्जन हुआ।

मंत्रिणी रेशमा सूकर
पाई आर्य समाज

AUM

Course in Vedic Prayers and Values Education at NEERGHEEN BHAWAN, CUREPIPE ROAD

A group of experienced Educators (retired Teachers, Head Teachers, Senior Inspectors, Rectors) of Curepipe Road Arya Mahila Samaj will run the above-mentioned course on Wednesdays from 3.30 p.m. to 4.30 p.m. for young children (preferably 8 years old to 15 years old) as from 01 March 2017.

The prayers and bhajans (devotional songs) will be explained in Hindi, English, French and Creole. Side by side, children will avail themselves of our reading library (English, French and Hindi) under the guidance of our experienced educators.

Interested parents/responsible parties can contact -- (i) Arya Sabha Mauritius (Tel. No. 2122730/2087504) or (ii) Mrs R.B. Puchooa (Tel. No. 57808775 / 6966674).

ऋषिबोध क्यों

आचार्य विरजानन्द उमा, आर्य

ऋषिबोध हमें ऋषि दयानन्द के जीवन, कृति और त्याग पर फिर से स्मरण कराता है।

गीता के अनुसार जब-जब धर्म, न्याय और कर्तव्य का ह्रास होने लगता है, अधर्म की वृद्धि अन्याय और अकर्तव्य का प्रचार होने लगता है तब-तब कोई न कोई महापुरुष, धार्मिक लोगों की रक्षा और दुष्टों के विनाश के लिए इस पवित्र भूमि पर धर्म, न्याय और कर्तव्य की पुनः स्थापना के लिए आते हैं ।

ऋषिबोध उत्सव हमें फिर से उस महान् क्रान्तदर्शी, दार्शनिक महापुरुष की याद कराता है। हमारा कर्तव्य है कि उनके जीवन, कृति और त्याग को जनता के सामने रखें और उसको कार्यान्वित करें ।

आज हम ऋषि दयानन्द की कुछ देन पर विचार करेंगे। प्रत्येक महापुरुष संसार को कुछ न कुछ महत्वपूर्ण देन देता है। जिस समय समाज को जिस-जिस तत्व की आवश्यकता होती है, महापुरुष उसी के अनुसार समाज में क्रांति लाता है। जब सम्पूर्ण जगत् निद्रा में होता है तो वह जागता रहता है । वह सच्चे अर्थों में राष्ट्र, जाति, समाज तथा मानवता का प्रहरी होता है।

महापुरुष की प्रथम देन होती है - निर्भीकता। जब कुछ लोग मैदान छोड़कर भाग जाते हैं तब वे अत्यन्त निर्भीक होकर सिंह की भाँति डटे रहते हैं। देश, जाति और राष्ट्र में सत्य का प्रचार-प्रसार और प्रवर्धन के लिए निर्भीकता से डटे रहते हैं। परिस्थितियों से घबराते नहीं हैं। परिस्थितियाँ उनकी दासी हो जाती हैं ।

कई उदाहरण हमें ऋषि दयानन्द के जीवन से मिलते हैं जहाँ निर्भीक होकर उन्होंने समाज में कार्य किया। बाधाएँ उन्हें रोक नहीं सकीं। बिना कर्म में लिप्त हो कर वे सामाजिक कार्य में आगे बढ़े । समाज को कर्म में प्रवृत्त कराने के लिए ही वे कर्म करते रहे, उनके कर्म लोगों के लिए प्रमाण और उदाहरण बने।

मनुष्य हमेशा निर्भीक व्यक्ति का ही अनुसरण करता है –
गीता के अनुसार –

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्त्त देवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरूते, लोकस्तदनुवर्त्ततो ।।

गीता ३/२१

जो निर्भीक होकर सामाजिक कार्य सत्य को बचाने के लिए करता है, वह मरकर भी अमर हो जाता है। दूरदर्शी युगपुरुष महर्षि दयानन्द भौतिक शरीर से आज इस वसुन्धरा को भले ही शोभायमान नहीं कर रहे हैं, परन्तु उनका यशोमय दिव्य शरीर आज भी हमारे मध्य विराजमान है। उनके इस निर्भीक गुण-गरिमा सूर्य की रश्मियों की भाँति चारों ओर फैल रही हैं। वह ज्योति किसी एक समूह, जाति, समुदाय या एक राष्ट्र का ही महत्व नहीं है। उस के लिए ग़रीब, धनी, काले-गोरे का कोई भेद नहीं है।

निर्भीकता के बाद सत्य की देन - महर्षि दयानन्द जी अपने प्रत्येक ग्रन्थ में सत्य का प्रतिपादन और असत्य का विरोध किया है।

'आर्योद्देश्यरत्नमाला' से लेकर 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' तक ऋषि ने सत्यवादी, सत्यमानी और सत्यकारी परम्परा को परिपुष्ट करने की चेष्टा की है।

'आर्योद्देश्यरत्नमाला' पुस्तिका में १०० रत्नों को सत्य सिद्धान्त रूपी धागों से पिरोया गया है, जिसमें ईश्वर, धर्म, अधर्म, पाप, पुण्य, विश्वास, प्रार्थना, उपासना, प्रार्थना का फल, उपासना का फल, जन्म, मृत्यु, तीर्थ, सत्य, असत्य, नमस्ते, वेद आदि का सत्य अर्थ बताया गया है। केवल इन १०० शब्दों के अर्थों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति भ्रम से दूर हो सकता है। इसी सत्य ज्ञान की सहायता से व्यक्ति सत्य सिद्धान्त, सत्य मान्यता एवं सत्य कर्म की ओर प्रेरित हो जाता है।

इसी प्रकार बालकों के लिए वर्णोच्चारण शिक्षा द्वारा सत्य उच्चारण का सिद्धान्त बताया गया है। शब्द की उत्पत्ति, स्थान भेद, फल आदि सत्य-ज्ञान दर्शाया गया है। इसी सत्य ज्ञान से बालक का आधार सुदृढ़ और सबल हो जाता है।

शिक्षा से वर्णोच्चारण शिक्षा में सत्यता

व्यवहार से व्यवहार भानु के द्वारा सत्यता, कल्प से संस्कार विधि के सिद्धान्तों के प्रतिपादन में सत्यता - आज देश भर में १६ (सोलह) संस्कारों का प्रचार-प्रसार हो रहा है। दम्पतियों में १६ संस्कारों का ज्ञान भरा जा रहा है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक का सत्य सिद्धान्त संस्कारों के माध्यम से संस्कार विधि में दर्शाया गया है। यह सत्य की ही देन है।

लोग संस्कार का महत्व ज्ञान रहे हैं, पहचान रहे हैं और उसे मानकर अपना रहे हैं। सत्य हमेशा प्रकाशित एवं प्रभावित होता है। जो सत्य का अनुशरण, अनुगमन एवं अनुशासन करता है वह आगे बढ़ता है।

शिक्षा, व्यवहार कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द एवं ज्योतिष में भी ऋषि जी ने सत्य का प्रतिपादन किया है।

सबसे महान एवं बृहद् दान ऋषि का है वेद का द्वार खोलना। उनके आने से पहले लोग वेद को मान्यता नहीं देते थे।

वेद मानव जाति का सब से प्राचीन पवित्र और महात्वपूर्ण ग्रन्थ है। वह सब विधाओं तथा ज्ञान-विज्ञान का आधार है, परमेश्वर से लेकर तृण तक सभी छोटे-बड़े पदार्थों का इसमें विवेचन किया गया है। परम कारुणिक भक्तवत्सल परम पिता परमेश्वर ने प्राणी मात्र के कल्याण की कामना से सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक महर्षियों को चारों वेद का सत्यज्ञान दिया। उन पवित्र आत्मा तपः पूत-ऋषियों ने अन्य ऋषियों को उनका ज्ञान कराया। गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा इसका प्रचार होता रहा ।

बृहते प्रथमं वाचो अग्रे यत्प्रैरतं मान धेयं दधानः ।
यदेषां श्रेष्ठ यदरिप्रमासीत् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः ।

इस पावन वेद के विषयों को समझने के लिए महर्षि जी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका रूपी देन हमें प्रदान की ।

जो धर्म-कर्म हीन हो गये थे, वे अपने गौरव को भी भूल गये थे। मर्यादा को भूल गये थे। वर्ण व्यवस्था क्या थी उनको पता नहीं था, आश्रम व्यवस्था भंग हो गई थी, समाज में जाति व्यवस्था प्रचलित हो गई थी, छुआछूत की अत्यन्त

शेष भाग पृष्ठ ३ पर

सायं का समय

पंडित राजमन रामसाहा, आर्य भूषण

सायं का समय प्रातःकाल के समय सा बराबर नहीं होता है। अधूरे काम को पूरा करने का समय होता है। किसी से मिलने जाना होता है। दिवस के काम निपटाकर कभी देर करके लौटना पड़ता है। कहीं कमिटि में भाग लेना होता है। कितनों को कोई निश्चित समय सन्ध्या के लिए निकाल पाना कठिन पड़ता है। पत्नी यदि काम करने वाली होती है तब सबके लिए शाम के खाने के प्रबन्ध की ज़िम्मेदारी उठानी पड़ती है। बच्चे पाठ लेने निकले होते हैं, सभी को सामूहिक एक स्थान प्रति शाम को मिल लेना बड़ा कठिन होता है।

सायं के समय में स्थिरता से एकत्र हो जाना आसान नहीं होता है। जिन घरों में यथासम्भव भोजन करने से पूर्व सन्ध्या साथ मिलकर लेना हो पाता है, तो उस आदत को कभी नहीं तोड़नी चाहिए। कारण ऐसे समय को बनाए रखना नसीब वालों को मिलता है।

कितने लोग कितने ही बझे क्यों न हों, पर इस समय के सम्मान में स्थान पर आ जाने का प्रयत्न करते हैं, पर इस युग में सबसे सन्ध्या हो नहीं पाती। जहाँ हो नहीं पाती, वहाँ पर सम्मति दी जाती है कि आप जब भी घर लौटें, भोजन लेने से पहले अकेले में सन्ध्या पढ़ लेने की आदत बनाए रखें। आप के लिए बिना सन्ध्या किए भोजन नहीं करना है।

इस युग में सायं की सन्ध्या का कोई निश्चित समय उन लोगों के लिए बन सकता है जिस घर के सभी लोग दैनिक किसी हालत पर देर से देर साढ़े छह बजे तक घर पहुँच जाते हैं। वे अपने परिवार को सात बजे या सवा सात बजे एक साथ जुटाकर सन्ध्या करते रहने की परिपाटी चला सकते हैं।

टी०वी० देखने के कारण सन्ध्या करना नहीं छोड़ना चाहिए। हमें एक वक्त निकाल कर रोज़ अपने देश का समाचार सुन सेना चाहिए। सन्ध्या करने की आदत से हमें मनुष्य बने रहने में बड़ी मदद मिलती है। जो भगवान् को मानता है, वही मनुष्य है।

यही कारण है कि मनुष्य बने रहने के लिए हमें किसी भी हालत में सन्ध्या करने को भूलना नहीं चाहिए। दूसरा है सोने जाने से पहले किसी भी धार्मिक ग्रन्थ को दस से पन्द्रह मिनट स्वाध्याय करते रहना चाहिए। बिना स्वाध्याय किए सन्ध्या सफल नहीं होती है।

कितनों का नियम है। वे भोजन से पहले सन्ध्या कर लेते हैं और भोजन को पचाने में थोड़ा सा स्वाध्याय कर लेते हैं। सन्ध्या करने वाले अपने दिन भर की थकान दूर करते हैं और स्वाध्याय करने वाले अपने दिन भर की उलझनों को भूल जाने पर अच्छी नींद पाने के लिए स्वाध्याय कर लेते हैं।

चाहे आपको अकेले ही रोज़ सन्ध्या बड़ी देरी से करनी पड़े, एक बार कि बिन सन्ध्या किए आपने रात का भोजन नहीं किया। यह आप के जीवन में बहुत अच्छा स्वभाव माना जाएगा। इसी संस्कार को आप जितनी बार जन्मेंगे हर जन्म में ढोकर लेते जाएँगे।

हो सके धन ढोकर एक जन्म से दूसरे जन्म में ले नहीं जाते हैं, पर संस्कार तो अवश्य ले जाते हैं, तभी आर्य-धर्म की मुख्य पहचान सन्ध्या है। यदि इसका संस्कार बना रहेगा, तब हर जन्म में आप भगवान् के भक्त ही रहेंगे।

कितने लोग सायं की सन्ध्या मोटर में या बस में आते समय चुप-चुप कर लेते हैं। यह भी क्षम्य है, पर जो अपने घर आकर भोजन से पहले सन्ध्या बोल लेने का प्रयत्न करते हैं। उस पिता या माता का बाल-बच्चों पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ता है। बच्चों में यह संस्कार पड़ना चाहिए कि मेरे बड़े बिन सन्ध्या किए भोजन तक नहीं करते हैं। घर में माँ का रोल बड़ा महत्व का होता है। घर का धर्म भी माँ ही है। आज कल अन्तर विवाह के कारण घर हिल गया है। कहीं माँ के स्वभाव के रीत-रिवाज से घर चलता है तो प्रायः आलसी बाप की मनमानी के वातावरण में सभी जीने वाले बन जाते हैं। विवाह करने से पहले इस बात पर फ़ैसला ले लेना होता है। एक सम्मति है कि विवाह के बाद पति-पत्नी को चाहिए कि दोनों अपने जीवन के दैनन्दिनी कार्यक्रम में सन्ध्या को स्थान देवें। जिस घर में सन्ध्या नहीं होती है, वह घर न होकर होटल बन जाता है। आज गाँव-गाँव होटलों के जन्मे बच्चे स्कूल में अनेक प्रकार के तमाशों के शिकार हैं।

बहुत बच्चे क्रियोली बोलकर, तो कुछ फ्रेंच छाँट कर या थोड़े अंग्रेज़ी बुदबुदाकर चमक तो रहे हैं, पर अपने घरेलू धर्म पर खड़े न रहने से उनकी अपनी रक्षा नहीं है। हमारे बच्चे सुरक्षित नहीं हैं हमने बच्चों को मोरिस्यें बनाने के नाम पर नास्तिक बना तो नहीं डाला है । इस पर थोड़ा ग़ौर करना है ।

स्वामी दयानन्द और आर्य समाज पर लिखे गये ग्रंथों का रहस्य

प्रह्लाद रामशरण

यह समझ से परे की बात है कि १९३० से १९७० तक स्थानीय आर्यसमाज आंदोलन पर किसी भी मॉरिशसीय विद्वान् द्वारा कोई भी पुस्तक नहीं लिखी गई । १९७० में प्रह्लाद रामशरण की अंग्रेज़ी पुस्तक प्रकाशित होते, रामधन पूरण, मोहनलाल मोहित और पं० धर्मवीर घूरा ने तद् विषय पर अपनी अपनी पुस्तकें प्रकाशित करवायीं। फिर १९७३ से १९९८ तक पुनः किसी भी स्थानीय (प्रह्लाद रामशरण को छोड़कर) आर्य समाज मॉरिशस के इतिहास पर कोई पुस्तक नहीं लिखी गई। और १९९८ से २००४ तक निम्नलिखित विद्वानों की पुस्तकें सामने आईं :–

1. Major figures of Arya Samaj in Mauritius, by B. Bissoondoyal and M. Banymandhub, pp68, 1998
2. Arya Samaj and Arya Sabha, by Moonindra Nath Varma, pp 112, 1998
3. Hinduism and Arya Samaj by Moonindranath Varma, pp 240, 2000

४. आर्य महिला गाथा, सम्पादक मंडल, पृ० सं० १००, २००१

५. मॉरिशस में आर्यसमाज की बहती अविरल धारा, डॉ० उषा शर्मा, पृ० सं० ३७७, २००१

6. Revitalising the Arya Samaj, by Prof. Soodursun Jugessur, pp224, 2002

७. हमारे पुरोहित मंडल, संपादक मंडल, पृ० सं० ३६४, २००२

8. The Arya Samaj in Mauritius and South Africa by Dr Oudaye Narain Gangoo, pp 384, २००४

इसी अवधि में प्रह्लाद रामशरण की बारह पुस्तकें, स्वामी दयानंद अथवा स्थानीय आर्यसमाज आंदोलन पर हिन्दी, अंग्रेज़ी और फ्रेंच में छपी हैं जिसकी जानकारी 'आर्योदय' साप्ताहिक पर दी जा चुकी है ।

पृष्ठ २ का शेष भाग

भयंकर महामारी थी, चारों ओर हीन, दीन, मलिन व्यवस्था थी। एकता का अभाव, मानवता का अभाव, समाज में दुर्बलता व्यक्ति के मनोभाव में दुर्बलता।

इन सभी दुर्बलताओं को अभावों को, कमियों को, विषमताओं को, बुराइयों को और असंगतियों को दूर करने के लिए महर्षि जी ने प्रबल युक्तियों और शास्त्र प्रमाणों की सहायता से खण्डन किया। वेद मन्त्रों के द्वारा सत्य का प्रचार किया और एक ज्वलन्त उदाहरण सत्य की देन का सत्यार्थप्रकाश है सत्य अर्थ का प्रकाशन करना ऋषि का लक्ष्य था। सत्य के द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास हो। शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास सत्य के आधार पर हो। केवल सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में ऋषि जी ने बत्तीस बार 'सत्य' शब्द का प्रयोग किया। इसका स्पष्ट अर्थ है कि सत्य ही श्रेष्ठ, मान्य एवं सिद्धान्त है, जो शाश्वत एवं दृढ़ है। मानव-कल्याण-हेतु वह साधन है सत्यार्थप्रकाश' में जिसके आधार से मनुष्य उज्ज्वल और प्रकाशमय हो सकता है। आज अगर हम राम, कृष्ण, हनुमान, गुरु विरजानन्द, स्वामी दयानन्द और अन्य सत्पुरुषों का आदर, सम्मान और आराधना करते हैं तो उनके सत्य आचरण एवं सत्य कर्म के कारण। याद करें कि इनके जीवन वेद के आधार पर सत्यमय था –यज्ञ, हवन, संध्या आदि से ही संस्कारित थे।

'सत्यार्थप्रकाश' के प्रथम सम्मुलास में ईश्वर पर सत्य वचन, द्वितीय समुल्लास में सन्तान की शिक्षा के आधार पर सत्य वचन, फिर अध्ययन अध्यापन, यज्ञ, सन्ध्या, वर्ण व्यवस्था आश्रम, व्यवस्था, राजनीति, न्याय व्यवस्था, आचार, अनाचार, व्यवहार-कुशलता, मोक्ष बन्धनव्यवस्था, आहार व्यवस्था, आदि पर सत्य वचन-प्रदान करके मानवता को सबसे बड़ा सहयोग पहुँचाया है – यह उत्तम दान मानव मात्र को महर्षि जी ने दिया है।

ऋषि बोध उत्सव पर यही हमें चिन्तन, मनन और निदिध्यासन करना है। जिस प्रकार उस कोमल हृदय वाले मूलशंकर को बोध हुआ हमें भी उससे कुछ सीखना है। सत्यवादिता, सत्यकारिता और सत्यमान्यता की ओर अग्रसर होना है।

स्वतन्त्रता संग्राम के नींवधारक महर्षि दयानन्द

पंडित धर्मेन्द्र रिकाई, आर्य भूषण

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मजात क्रान्तिकारी थे। उनके हृदय में राष्ट्र के प्रति अथाह प्रेम था, तभी तो सन् १८७२ में भारत के तत्कालीन वायस राय नार्थब्रुक के मुँह पर ही इस फ़क़ीर ने कह दिया था, मैं नित्य प्रातः-सायं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि मेरा देश पराई दासता से मुक्त हो। 'अपने विश्वविख्यात ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के आठवें समुल्लास में उन्होंने लिखा – कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है।' इसी ग्रन्थ में वे कहते हैं – 'माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।' उन्होंने अपने ग्रन्थ आर्याभिविनय में वेद मन्त्रों के माध्यम से स्थान-स्थान पर अद्भुत प्रार्थनाएँ कीं जो उनकी देश-भक्ति की उत्कट भावनाएँ प्रकट करती हैं। कहते हैं कि चन्द्रशेखर आज़ाद तब तक अन्न ग्रहण नहीं करते थे जब तक इस ग्रन्थ के एक मन्त्र का स्वाध्याय नहीं कर लेते थे। इसी ग्रन्थ में एक स्थान पर वे कहते हैं – 'विदेशी राज्य हमारे देश पर कभी शासन न करे ।' लोक मान्य जी का कथन है – दयानन्द 'स्वराज्य' शब्द के प्रथम सन्देशवाहक थे। मदनमोहन मालवीय जी का कथन है – वह भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे। इसी स्वतन्त्रता और दिव्यता की विधिवत् प्राप्ति के लिए उन्होंने १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज ने चारों ओर चेतनता और नवजागरण की ऐसी धूम मचाई कि एक अमेरिका विद्वान् कह उठा – मैं एक धधकती ज्वाला को देख रहा हूँ। अनन्त प्रेम की अनन्त ज्वाला जो समस्त द्वेष दावानल को भस्मसात् कर देगी। इस धधकती ज्वाला का नाम है 'आर्य समाज'। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने उस समय स्वतन्त्रता प्राप्ति की सिंह-गर्जना की थी। जब समस्त भारतीय समुदाय आलस्य और भय की गहरी नींद से सोया हुआ था।

एक अंग्रेज़ ने कहा – किसी भी आर्य समाजी की खाल को खुरचकर देखो तो अन्दर छिपा हुआ क्रान्तिकारी देशभक्त दयानन्द दिखाई देगा। सचमुच में ही आर्यसमाज क्रान्तिकारियों का स्रोत बन गया। यहाँ तक कि आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में अंग्रेज़ गुप्तचर बैठे रहते थे। आर्यसमाज को अनेक प्रकार की यातनाएँ सहनी पड़ीं मगर नर्म और गर्भ दोनों ही दलों में यह अपनी सक्रिय भूमिका निभाता रहा। काँग्रेस के इतिहास में डॉ० पट्टभि सीता रामैया लिखते हैं – *'स्वतन्त्रता संग्राम में अस्सी प्रतिशत से भी अधिक आर्यसमाज के लोगों का सहयोग रहा है।'*

आर्यसमाज ने अपने बलिदानों की कीमत नहीं माँगी। अपनी तप और त्याग का ढिंढोरा नहीं पीटा, जबकि भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति में उसका सबसे अधिक सहयोग रहा। सुप्रसिद्ध नेताओं के ये हार्दिक उद्गार आर्यसमाज के कार्य की मुँह-बोलती तस्वीर है। श्रीमती एमीबेसन्ट ने लिखा है।

महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने भारत भारतीयों के लिए का नारा लगाया। राजा महेन्द्र प्रताप कहते हैं – 'आर्यसमाज क्रान्तिकारियों की संस्था है। इसके सदस्यों में देशप्रेम की भावना है। सर्व पल्ली डॉक्टर राधाकृष्ण का कथन है – 'स्वामी जी ने स्वराज्य का सबसे पहले संदेश दिया था। लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा – 'महर्षि दयानन्द महान् राष्ट्रनायक नेता और क्रान्तिकारी महापुरुष थे और उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य किया। दादा-भाई-नौरोज़ी कहते हैं- 'मुझे स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों से स्वराज्य की लड़ाई में बड़ी प्रेरणा मिली।

भूतपूर्व लोक-सभा अध्यक्ष अनन्त शयनम आयंगर ने कहा था कि – 'गांधी जी राष्ट्र के पिता थे तो महर्षि दयानन्द राष्ट्र के पितामह थे। डॉक्टर ऐनी बैसेंट ने तो यहाँ तक कहा –'जब स्वाधीन भारत का मन्दिर बनेगा, तो उसमें स्वामी दयानन्द की मूर्ति की वेदी सबसे ऊँची होगी।'

Nécrologie

Mokshda Kistoe-West (15 février 1932 – 16 février 2017)

Mokshada était la fille du Pandit Cashinath Kistoe et Mme. Radhika Duljeet-Kistoe, une famille de pionniers du mouvement Arya Samaj à Maurice.

Son père avait emboité le pas des géants. En novembre 1910, il mit le cap sur l'Inde en compagnie de R.K. Boodhun et l'éminent travailleur social, Manilal Doctor. Il était le premier mauricien à suivre une formation poussée sur la culture Védique. A son retour en 1915, Pandit Kashinath Kistoe devenait le premier missionnaire de l'Arya Pratinidhi Sabha. Le 1er aout 1918, il fondait une école à Vacoas, qui fut plus tard nommée le Pandit Kashinath Kistoe Aryan Vedic School, très prisée par les parents pour le niveau et l'environnement qui favorise le développement physique, moral et social de leurs enfants.

Sa mère était la fille de M. Guruparsad Duljeetlal, Ce dernier, M. Khemlal Lallah et M. Jugmohan Gopal formaient le trio qui avait lutté sans cesse à établir l'Arya Samaj ici en 1903, 1904, …et la tentative de 1910 fut la bonne. Mme Radhika fut la cheville ouvrière dans la mobilisation des dames au sein de l'Arya Samaj. Elle consacrait sa vie à l'éducation de la gente féminine.

Suivant les énoncés du 6ème principe du mouvement, les actions des parents de Mokshda dans le secteur de l'éducation débordaient le cadre de l'Arya Samaj pour profiter aux mauriciens de toutes les communautés à l'ère des dénis sous l'administration coloniale. Et le tabou, déniant l'accès à l'éducation aux filles, se brisait. La charité bien-ordonnée commence chez soi …et Mokshda, la fille du Pt. Cashinath et Mme. Radhika, se donne à fond.

Mokshda était une source d'inspiration pour les Mauriciennes. Sereine, elle esquissait son chemin au couvent de Lorette de Quatre Bornes et se hissait au sommet : première lauréate hindoues, elle entame un parcours brillant à l'Université de Cambridge. Enseignante au Queen Elizabeth College (QEC) pendant des années, elle prend les rênes du collège en tant que rectrice en 1968 et devient ensuite la première Registrar du Mauritius Institute of Education (MIE). Ceux qui l'ont côtoyée reconnaissent en elle un autodidacte qui a forgé sa place parmi les grands façonneurs du secteur de l'éducation à Maurice.

Elle emboite les pas de ses parents dont elle a hérité les valeurs humaines universelles de la culture Védique. Ils sont plusieurs à louer ses qualités : une intelligence au-dessus de la moyenne, sa quiétude invariable, son amour pour les langues et de la littérature anglaise, sa grande culture et sa sensibilité qui poussait les jeunes à s'appliquer dans les études. Elle était un 'role model' pour les jeunes. Sa vie a imprégné celle de dizaines de milliers de mauriciens. L'effet boule de neige continuera à laisser les traces parmi des générations à venir.

L'histoire témoignera d'une pierre blanche ou en des lettres d'or la contribution de Mokshda, une petite grande dame, petite de taille physique mais grande en vue du tsunami (les vagues immenses) qu'elle a généré dans le paysage éducatif de l'Ile Maurice et qui continueront à influencer la vie de nos citoyens …à distance.

Ci-dessous les hommages répercutés dans les médias :

M. Michael Atchia, ancien collègue : «Mokshda était une femme posée, cultivée. Elle était non seulement imprégnée de culture indienne mais aussi anglaise, française et mauricienne de premier ordre… Elle a imprégné une autre philosophie de l'éducation à cette école (le QEC)… Sa philosophie reposait sur l'amour de l'étude, la promotion des langues, dont l'anglais, le respect des autres et les bonnes manières… Elle avait le sens du partage et incitait tout le monde, élèves comme enseignants, à se dépasser… Elle est toujours restée une personne humble. Elle n'a jamais couru derrière les honneurs ».

Sarita Boodhoo, qui a d'abord été son élève, puis collègue : « J'ai été frappée par son calme et sa douceur… Elle nous a inculqué l'amour de la littérature anglaise et de l'anglais. C'était une intellectuelle qui a été un modèle pour nombre de filles… Il y a eu de nombreuses interactions entre nous jusqu'à tout récemment, au sein de la Elizabethan Association, qui regroupe les anciennes élèves. She was a very high level intellectual».

Christiane Marie-Louise Rehaut Johnson, London : I know her well before leaving Mauritius in 1975. She was an amazing lady. I wanted to visit her during my last visit xmas 2016. Now I will have to leave with fondest memories

Edwidge Turner : Oh this is sad news, I know that all the girls of the QEC will always remember Miss Kistoe with great fondness. She was not just brilliant, she was kind too.

Jacqueline Tennant : Cette dame a été non seulement la première lauréate hindoue au Couvent de Lorette de Quatre Bornes! Et...comme le dit si bien l'article (*) elle a été aussi un modèle pour bon nombre de femmes à l'Ile Maurice!!! Hormis son intelligence, l'éducation reçue de ses parents, avouons-le...les religieuses de Lorette ont aussi grandement contribué à une éducation académique de qualité enrobée de moralité et de spiritualité!!!!
(*) l'express 17 février 2017)

Di Preet: Blessed soul... Ever grateful to all you have taught me the love for literature... U were simply the best Ma'am....Forever in our mind and heart...

Anushka Radhakissoon-Pochun: She was such a wonderful teacher who contributed enormously to my education.

Arati Gujadhur: Very sad news. I will remember you the lady who was always so graceful and was a role model to all of us students of Q.E.C.

Sheila Virahsawmy: Mokshda. You have been an inspiration for many of us.

Aisha Auckburally: ...End of an Era ...She was a great lady …and a good role model.

Ci-dessous les témoignages que j'ai recueillis auprès des parents de Mokshda le dimanche 19 février après le Yajna (prière) tenu en sa demeure à Floreal:

M. Praveen Duljeet, cousin (68 ans): « Mokshda brillait par sa simplicité, le sens de fair-play st d'intégrité, une intelligence au-dessus de la moyenne… Elle a réalisé l'essentiel …elle a su gérer le patrimoine immatériel légué par ses parents, c'est-à-dire trouver le salut à travers une éducation qui favorise le développement humain… Elle a influencé le parcours éducatif des proches et d'autres… Les efforts de se surpasser en tant qu'être humain en vivant les valeurs de la vie fait d'elle une éducatrice comblée. »

Mme. Deepmala Boolell-Duljeet, cousine (78 ans): « Je témoigne un profond respect envers Mokshda qui m'a appris beaucoup de choses qui m'a aidé à plusieurs étapes de ma vie… Sa rigueur au travail et dans la vie, son simplicité, sa clairvoyance et sa façon de gérer les situations difficiles où elle cherchait et apportait les solutions font d'elle un role model.»

Mme. Nirmala Duljeet (meilleure amie) : « Mokshda n'avait que de l'affection à donner aux autres… les humains aussi bien que les animaux domestiques. Sa façon de vivre et de faire sont une source d'inspiration pour moi. »

Mme Kavita Jeeha, femme de ménage (au service de Mokshda pendant les 18 dernières années): « D'une étonnante patience, elle était le mentor de mes enfants en qui elle a inculqué les valeurs de la vie, somme tout - un héritage inestimable. Deux ont brillé avec une distinction en Anglais et sont étudiants à l'université. La troisième, inspirée par Mokshda pense à devenir vétérinaire. »

Mme. Sunita Kistoe, nièce (IT Officer, Postal Services) : « Mokshda nous a appris les valeurs de la vie, la discipline et l'amour de la lecture et de l'art… Elle jouait au piano, tissait des tapis et peignait des tableaux. »

Dr. (Mme) Sushita Gokool-Ramdoo, nièce (Acting Head, Distance Education and Open Learning, TEC):
« Mokshda, affectueusement appelée Coco, avait un amour génial pour les humains, les animaux et les livres. La philosophie de l'Arya Samaj, focaliser sur l'éducation et le bien-être physique, moral et sociale de tous coulait dans ses veines. Elle répondait toujours présente pour ceux qui cherchaient conseil. Un leader, un trend setter elle était d'une aura que ressentaient tous ceux qui l'ont côtoyée. Elle était 'a campus on her own'. Elle a su tenir, avec brio, les plus hautes responsabilités au sein du QEC, Mauritius College of the Air (MCA) et MIE. Sa vie était un combat dès l'enfance jusqu'aux derniers moments. Tout comme son père, Pt. Cashinath Kistoe, elle était 'a first' sur plusieurs fronts. »

Me. Yashvin Duljeet, neveu (conseiller légal, 36 ans) : « Coco, une dame exemplaire… cultivée dans le vrai sens du mot… arborant fièrement le sari, symbole de la culture hérité de ses parents… se tenait au courant de tout ce qui intéressait les jeunes afin qu'elle puisse se mettre à leur niveau et ensuite faciliter leur apprentissage, par exemple connaitre les équipes de foot et les joueurs… le sens d'appartenance à la famille et la société. Elle me rendait fière de par son calme et son allure le temps qu'elle était l'invité d'honneur pour les célébrations de la fête nationale et elle nous remettait les prix de meilleurs performances et moi, le petit neveu recevait de ses mains un prix pour le 'A' que j'avais en Hindi. »

Pourquoi le sobriquet 'Coco' ?
Dans la langue 'créole mauricien' on appelle quelqu'un d'une intelligence au-delà de la moyenne Coco car le coco est un des rares fruits à multiple usages : l'eau un désaltérant et un remède en cas de déshydratation ; le lait et la noix de coco sont utilisé dans la préparation des douceurs et de plusieurs mets, et durant les prières à travers diverses cultures ; la coque autour de la noix sert dans la fabrication des produits à haute valeur ajoutées dans l'artisanat ; la paille pour fabriquer des cordes et des tapis ; en somme apprécié de tous sous différents angles.

Des témoignages, cités plus haut sur les multiples facettes de la vie de Mokshda, on conclut qu'elle le méritait bien ce sobriquet : Coco.

Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya (Snātak - Darshan Yog Mahavidyālaya) Arya Sabha Mauritius

Bibliographie : L'express, Le défi quotidien, Aryodaye, Internet & Facebook

WHAT IS RISHI BODH?

Sarvanand Nowlotha,B.A., Secretary Arya Yuvak Sangh

"The day when the Rishi was born is called Rishi Bodh" was the answer given by a teacher to his student not long ago. It is sad to note that educated people are disseminating ignorance instead of knowledge. "Bodh" means enlightenment and has nothing to do with 'born'.

In fact, for a better understanding, we have to delve on the backdrop of events and situation prevailing at that epoch. It was a dark period in the history of India which was under foreign clutches, precisely the Imperial British. The latter had overhauled the Great Peninsula with its culture and language. Thus, India was dancing to the tunes of Britain and was subject to its whims and fancies. The Chakravarti India was crushed under the shrewdness of the British colonialism. At that time superstitions and ignorance went rife there. The Vedas were forsaken and blind faith had taken deep roots in the psyche. With foreign invasion on one side and dwindling social conditions on the other side, feelings were smothered. It badly needed a child of the soil to redress the situation.

That prodigal son had already taken birth and was in his adolescence. Moolshankar, as Dayanand was called in his young days, was the pride of his village Tankara, Gujarat. One night, during Mahashivratri, he went sleepless as was the custom. His father, Karsan Ji Tiwari had told him that God Shiva would pay him a visit if he remained awake till early morning. To his surprise, other devotees had already slept. But what followed gave him a jolt. Rats came, ate the offerings, mounted the idol of Shiv and messed around. Is idol worship the right worship? That dark night was not "dark" because it had enlightened Moolshankar who later went to become Swami Dayanand. He got the "bodh" i.e. the enlightenment.

Thereafter, he strived to rid India of blind faith, opposed idol-worship and brought back the Vedas to Indians. He advocated for women's education and abolition of the Sati system. Moreover, he founded the prestigious Arya Samaj. Finally, he was the first of the pioneers of India's independence. We bow to him!

SHIVA IS DEPICTED IN MEDITATION

- People say "Om Namah Shivaya".

- Is Shiva saying : 'Om Namaha Shivaya'?

- Is he praying to himself ?

- If he closes his eyes and meditates, then, it is obvious that there is a greater force above him to whom he does connect… ..and that is the eternal Om.

- Better connect to the Almighty (OM) directly and eternally.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचार्य*
इस अंक में जितने लेख आये हैं, इनमें लेखकों के निजी विचार हैं। लेखों का उत्तरदायित्व लेखकों पर है, सम्पादक-मण्डल पर नहीं ।
Responsibility for the information and views expressed, set out in the articles, lies entirely with the authors.
मुख्य सम्पादक
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038.